७३. चंदगड तालुक्यातील शेतमजुरांचा आर्थिक अभ्यास
- डॉ. के. पी. वाघमारे ---------- ३१०

७४. जिरायती व बागायती शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या प्रवृत्तीचा तुलनात्मक अभ्यास
- प्रा. सविता रामचंद्र रेवडे ---------- ३१५

७५. कृष्णा सोबती के साहित्य में शोषित एवं उपेक्षित नारी
- डॉ. कदम संदिप तानाजी ---------- ३१७

७६. गोंड आदिवासी जमाती के प्रमुख और समाजक्रांती के प्रणेता – "बिरसामुंडा"
- आशा बुधराम मडावी ---------- ३२०

७७. दूधनाथ सिंह तथा ज्ञानरंजन की कहानियों में नारी विमर्श
- श्रीमती. ज्योती एकनाथ गायकवाड ---------- ३२२

७८. "हिंदी कथा–साहित्य : नारी विमर्श"
- लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील ---------- ३२७

७९. 21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी आंदोलन
- डॉ. श्रीकांत पाटील ---------- ३३०

८०. सर्वेश्वर द्याल सक्सेना के काव्य में सामाजिक मूल्य विघटन
- डॉ. भोसले काकासाहेब बापूसाहेब ---------- ३३४

८१. आत्मकथाओं में चित्रित दलित चेतना
- श्रीमती खुडे शुभांगी मनोहर ---------- ३३८

८२. स्त्री वेदना और विद्रोह की कहानी : 'नगाड़े की तरह बजते है शब्द'
- डॉ. युवराज माने ---------- ३४१

८३. भारतीय दलित आंदोलन और हिंदी साहित्य
- प्रा. डॉ. संजय य. चोपडे ---------- ३४४

▲▲▲

गोंड आदिवासी जमाती के प्रमुख और समाजक्रांती के प्रणेता - "बिरसामुंडा"

आशा बुधराम मडावी
डॉ. पतंगराव कदम महाविद्यालय,
रामानंदनगर (बुर्ली) ता.पलूस जि.-सांगली-416308
asha.madavi@gmail.com (8975134076)

सारांश :

आदिवासी समाज यह सबसे प्राचीन मूल भारतीय समाज है। ये सही मायने में मूल रहवाशी भी है। आदिवासी समाज पहाड़ों, घाटियों और जंगलों में रहते आये हैं। उनकी अपनी अलग बोली-भाषा, वेश-भूषा, सांस्कृतिक, सामाजिक परंपरा हैं। प्रकृती कि रक्षा करना उनका मुख्य हेतू रहा हैं। परंतू पिछले दो-तीन दशको सें आदिवासियो के मानव अधिकारो के हनन कि घटना बढते ही जा रही हैं। आदिवासियों का दमन करने वालों में ना केवल वरिष्ठ अधिकारी थे अपितु वे सभी थे जिन्हें आदिवासियों का हर समय अपमान व आदिवासियो के मानव अधिकारो का हनन किया, इनमे हम उन सभी गैर आदिवासी लोगो को, जमींदार, ठेकेदार, सूदखोर महाजन तथा सरकारी अधिकारी को शामिल थे ऐसा कह सकते है। प्राचीन काल सें लेकर आज के आधुनिक युग तक आदिवासियों के सभी आंदोलन यह केवल शोषण एवं दमन के खिलाफ थे। आदिवासी आंदोलन ये हमेशा सें जमीन, जल और जंगल को लेकर ही हुये है। अंग्रेजो ने भूमि सुधार नीतियां लागू कि, तभी से ही आदिवासियो के भूमि से पारंपारिक अधिकार समाप्त हो गये और वे केवल मजदूर बनके रह गये। तभी से आदिवासियों की आर्थिक स्थिती बिगडती चली गयी और एक नये युग नये आंदोलन कि सुरुवात हुयी । आदिवासियों के ऐसे ही शोषण के खिलाफ आवाज उठाने व समाज को जागृत करने का कार्य आदिवासी समाज के सामाजिक क्रांतिकारक बिरसा मुंडा इन्होने किया । जिनके विषय में मैने उनके किये गए कार्यो को यहाँ बताने का प्रयास इस आलेख के द्वारा किया है जिससे न केवल आदिवासी समाज अपितु समाज में जागरूकता निर्माण होने में मदत मिलेंगी ।

संज्ञा :-

आदिवासी, भूमि सुधार नीतियां, आंदोलन, शोषण, प्रतिकार।

प्रस्तावना :-

आदिवासी आंदोलन ये आदिवासियों के विभिन्न समस्याओं से संबंधीत है । अधिकतर आंदोलन ये अंग्रेजो के खिलाफ ही थे । अंग्रेजो ने भूमि सुधार नीतियां लागू कि तभी से ही आदिवासियो के भूमि से पारंपारिक अधिकार समाप्त हो गये और वे केवल मजदूर बनके रह गये। जंगल और जमिनो सें उनके अधिकार समाप्त कर दिये गये थे । जिससे उनकी जमीनों पर दुसरो का अधिकार हो गया । वे जमीनों सें बेदखल हो जाने के कारण उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिती बिगडने लगी। इतना ही नही तो धर्म परिवर्तन भी आदिवासियों के लिये एक प्रकार कि समस्या बन गया था । जंगल का कानून बदलना, जंगल के नियम यह अंग्रेजो के हाथो में आने की वजह से वह आदिवासियों को परेशान करने लगे, लकडी पर जकात लगा दीया । इस प्रकार अनेक तरह सें आदिवासियों का शोषण होने लगा । आदिवासियों के सभी आंदोलन यह केवल शोषण एवं दमन के खिलाफ थे। आदिवासी आंदोलन ये हमेशा सें जमीन, जल और जंगल को लेकर ही हुये है । यही से आंदोलन की सुरुवात हुयी दिखाई देती हैं । कालावधी के अनुसार आदिवासी आंदोलन ये तीन चरणों में विभाजित किये जाते हैं । प्रथम, दिव्तीय व तृतीय चरण ।

- प्रथम चरण :- 1789- 1860
- दिव्तीय चरण :- 1860 - 1920
- तृतीय चरण :-1920 - 1947

1789 से 1947 का कालावधी यह वही कालावधी है जिसमें में से एक चरण में बिरसा मुंडा थे । जिन्होंने 1895 से 1901 इस कालखंड में कार्य किया । गरीब आदिवासी समुदाय को जागृत करने का कार्य उन्होंने किया तथा आदिवासी समाज में जागरूकता निर्माण करने का बहुमूल्य कार्य किया जिस वजह से आज आदिवासी समुदाय अपने हक्क के लिए